मध्यकालीन भारत का इतिहास

भाग – 2

मुगल काल

By

ANKUR YADAV

मुगल वंश (1526-1858)

→ मुगल शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के MONG शब्द से हुआ है जिसका अर्थ - बहादुर होता है।

→ मुगलवंश के शासक तुर्की नस्ल के चगताई शाखा से सम्बन्ध रखते थे भारत में मुगल वंश की नींव 1526 ई० मे जहीरुद्दीन बाबर के द्वारा डाली गयी।

जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर -

जन्म - 14 Feb 1483 ई० (फरगना में)
पिता - उमर शेख मिर्जा (फरगना का शासक) [चगताई तुर्क]
माता - कुतलुगनिगार खाँ (मंगोल वंश)

→ नोट - जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर पिता की ओर से तैमूरो का 5 वाँ वंशज और माता की ओर से चंगेज खाँ (मंगोल वंश) का 14 वाँ वंशज था।

→ फरगना के शासक उमर शेख मिर्जा की 1494 ई० में मृत्यु हो जाने के पश्चात, बाबर अपनी दादी ऐसान दौलत बेगम के सहयोग से फरगना का शासक बना

→ प्रारम्भ में चाचा अहमद मिर्जा & मामा महमूद खाँ ने फरगना पर अधिकार करना चाहा लेकिन बाबर ने इन्हे असफल कर दिया।

→ 1496 ई० में बाबर ने समरकंद पर आक्रमण किया परन्तु असफल हुआ तथा 1497 ई० में दूसरी बार समरकंद पर आक्रमण करके 100 दिनो तक अपने अधिकार में रखा। लेकिन फरगना मे विद्रोह होने के बाद वह फरगना व समरकन्द दोनो को खो दिया।

सर-ए-पुल का युद्ध (1502 ई०)

→ यह युद्ध समरकन्द के तत्कालीन शासक शैबानी खाँ & बाबर के बीच लड़ा गया था इस युद्ध में बाबर पराजित होकर काबुल चला गया

→ परिस्थितियो का फायदा उठाकर 1504 ई० में बाबर ने काबुल पर अधिकार कर लिया

→ बाबर ने मिर्जा की पैतृक उपाधि त्यागकर 1507 ई० में पादशाह (बादशाह) की उपाधि धारण किया था।

बाबर का भारत पर आक्रमण -

① बाजौर & भेरा पर आक्रमण (1519 ई०)

नोट - यह बाबर द्वारा भारत मे लड़ा गया पहला युद्ध था जो युसुफजई जातियो के विरुद्ध था

② पेशावर पर आक्रमण (1519 ई०)

③ स्यालकोट पर आक्रमण (1520 ई०)

④ लाहौर & दीपालपुर पर आक्रमण (1524 ई०)

पानीपथ का प्रथम युद्ध (21 अप्रैल 1526 ई०) -

→ लाहौर के सुबेदार दौलत खा लोदी व मेवाड़ के शासक राणा संग्राम सिंह ने बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए आमन्त्रित किया

→ पानीपथ का यह युद्ध बाबर व इब्राहीम लोदी के बीच लड़ा गया जिसमे इब्राहिम लोदी की हार हुई तथा वह मध्यकाल का प्रथम शासक था जो युद्ध स्थल में मारा गया।

→ पानीपथ के प्रथम युद्ध में ही पहली बार बाबर ने तुलगमा युद्ध पद्धति व तोपखाने का प्रयोग किया।

→ इस युद्ध में तोपो को सजाने की उस्मानी पद्धति (दो गाड़ियो के बीच तोप रखना) का प्रयोग हुआ

→ इस युद्ध के बाद बाबर ने कलन्दर की उपाधि धारण की। युद्ध जीतने के बाद हुमायु ने बाबर को कोहिनूर हीरा दिया जिसे हुमायु ने ग्वालियर के दिवगंत राजा विक्रमादित्य से प्राप्त किया था।

→ उस्ताद अली एंव मुस्तफा बाबर के दो प्रसिद्ध निशानेबाज थे।

खानवा का युद्ध (17 मार्च 1527 ई०) -

→ यह युद्ध फतेहपुर सीकरी से 10 मील पश्चिम की ओर खानवा नामक गांव के पास बाबर व मेवाण के शासक राणा सांगा के बीच लड़ा गया था।

→ इस युद्ध मे राणा सांगा का सहयोग चदेरी के शासक मेदिनीराय ने किया था।

→ इस युद्ध में भी बाबर विजयी हुआ

→ बाबर ने खानवा के युद्ध के पश्चात 'गाजी' की उपाधि धारण की इस युद्ध के पूर्व बाबर ने जेहाद का नारा लगाया था तथा तमगा नामक व्यापारिक कर को समाप्त कर दिया था।

चन्देरी का युद्ध (29 जनवरी 1528 ई०) -

→ यह युद्ध बाबर व चन्देरी के शासक मेदिनीराय के बीच हुआ था इस युद्ध में बाबर की ओर से शेरशाह सूरी ने भी युद्ध किया था इस युद्ध में मेदिनीराय की पराजय हुई।

→ इस युद्ध में शेरशाह सूरी ने कहा "अगर सौभाग्य मेरा मित्र रहा और भाग्य ने मेरा साथ दिया तो मैं मुगलो को एक दिन भारत से भगा दूगाँ।

घाघरा का युद्ध (5 मई 1529 ई०) -

→ यह युद्ध बिहार प्रान्त में घाघरा नदी के तट पर बाबर व अफगानो के बीच लड़ा गया जिसमे अफगानो की हार हुई।

→ अफगानो की सेना का नेतृत्व इब्राहीम लोदी का पुत्र महमूद लोदी

कर रहा था।

→ यह बाबर द्वारा लड़ा अन्तिम युद्ध था। मध्यकालीन इतिहास में घाघरा का युद्ध प्रथम ऐसा युद्ध था जो जल व थल दोनो पर लड़ा गया था।

मृत्यु -

→ गुलबदन बेगम के अनुसार इब्राहिम लोदी की माता ने बाबर को जहर दे दिया जिसके कारण 26 Dec 1530 ई० को बाबर की मृत्यु हो गयी

→ बाबर को आगरा के आरामबाग में दफना दिया गया था। लेकिन शेरशाह सूरी के शासनकाल में बाबर की विधवा पत्नी मुबारक युसुफजई के द्वारा काबुल ले जाकर बाबर के चुने हुए स्थान पर एक उद्यान में दफना दिया गया।

→ इस प्रकार बाबर का मकबरा काबुल में है।

बाबरनामा -

→ बाबर ने तुर्की भाषा में अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी या बाबरनामा की रचना की

→ इसका फारसी में अनुवाद अकबर के शासनकाल में सर्वप्रथम पायंदा खाँ के द्वारा किया गया

→ अकबर के ही शासनकाल में अब्दुर्रहीम खान ने 1590 ई० इसका पुनः फारसी में अनुवाद किया

→ फारसी से अंग्रेजी भाषा में अनुवाद 1826 ई० में स्कलीन के द्वारा किया गया था।

→ तुर्की भाषा से अंग्रेजी भाषा में अनुवाद 1905 ई० में लंदन मे श्रीमती बैवरीज के द्वारा किया गया था

सिक्के -

दो प्रकार के सिक्के प्रचालित करवाया -

1- काबुल मे 'शाहरुख' (चाँदी का)
2- कंधार मे 'बाबरी'

→ सिक्को के एक ओर चारो खलीफाओ के नाम तथा दूसरी ओर अपनी उपाधि अंकित करवाया था।

चित्रकार -

→ बाबर की आत्मकथा में (बाबरनामा) 'बिहजाद' नामक चित्रकार का उल्लेख मिलता है।

स्थापत्य कला -

1- काबुलीबाग की मस्जिद (1529 ई०)
2- पीरखाना की मस्जिद (1529 ई०)

→ बाबर ने 1529 ई० में हरियाणा प्रान्त के पानीपत जिले में काबुलीबाग की मस्जिद तथा उत्तर प्रदेश राज्य के अलीगढ़ जिले मे पीरखाना मस्जिद का निर्माण कराया था।

→ बाबर का सेनापति मीर अब्दुल बाकी ने उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले में अयोध्या नामक स्थान पर बाबरी मस्जिद का निर्माण करवाया था।

- बाबर ने ज्यामितिय विधि पर नूरे अफगान नामक बाग लगवाये जिसे आरामबाग कहा जाता है।
- बाबर ने सड़क मापने हेतु गज-ए-बाबरी नामक पैमाने का प्रयोग किया था।
- बाबर को मुबईयान नामक पद्यशैली का जन्मदाता माना जाता है
- बाबर प्रसिद्ध नक्शबन्दी सूफी ख्वाजा उबैदुल्ला अहरार का अनुयायी था।

नासिरुद्दीन मुहम्मद हुमायु

→ बाबर के चार पुत्रो (हुमायूं, कामरान, अस्करी व हिन्दाल) में हुमायुं सबसे बड़ा था

जन्म - 6 मार्च 1508ई० (काबुल के किले में)
पिता - बाबर
माता - माहम सुल्ताना
चचेरा भाई - सुलेमान मिर्जा
प्रथम बार शासक - 1530ई० - 1540ई०
द्वितीय बार शासक - 1555ई० - 1556ई०

→ 30 दिसम्बर 1530ई० को हुमायु ने नासिरुद्दीन मुहम्मद हुमायुं की उपाधि धारण करके आगरा में अपना राज्याभिषेक कराया पिता की वसीयत के अनुसार साम्राज्य का अपने भाइयो मे बटवारा कर दिया

कामरान को काबुल व कंधार
अस्करी को सम्भल (रामपुर U.P के आस पास)
हिंदाल को अलवर प्रान्त

→ हुमायु ने दिल्ली के निकट 'दीन पनाह' नामक नगर की स्थापना की
→ हुमायु ज्योतिष में विश्वास करता था वह शनिवार के दिन काले वस्त्र तथा सोमवार के दिन सफेद वस्त्र व रविवार के दिन पीले वस्त्र धारण करता था।
→ दिल्ली में मीनाबाजार का प्रारम्भ हुमायु ने ही किया था।
→ बंगाल की राजधानी 'गौर' का नाम बदलकर 'जन्नताबाद' रखा

हुमायुँ द्वारा लड़े गये युद्ध -

कालिंजर अभियान (1531ई०)

→ यह हुमायु का प्रथम सैनिक अभियान था।
→ कालिंजर का राजा रुद्रप्रताप देव था लगभग 4 माह के घेरे के पश्चात हुमायु ने रुद्रप्रताप से सैनिको का हरजाना खर्चा लेकर सन्धि कर ली क्यो कि अफगानो का नेतृत्त्व कर्ता महमूद लोदी ने जौनपुर पर अधिकार कर लिया था।

दोहरिया का युद्ध (1532ई०)

→ यह युद्ध हुमायुं तथा महमूद लोदी के बीच उत्तर प्रदेश राज्य के जौनपुर जिले मे गोमती नदी के तट पर दोहरिया नामक स्थान पर लड़ा गया
→ इस युद्ध में हुमायु की विजय हुई।

चुनार के किले का प्रथम घेरा (1532ई०) -

→ 1532ई० में हुमायुं ने चुनार का प्रथम घेरा डाला परन्तु हुमायु तथा शेरशाह सूरी के बीच सन्धि हो गई

→ इस सन्धि के तहत चुनार के किले पर शेरशाह का अधिकार हो गया तथा शेरशाह ने अपने पुत्र कुतुब खाँ को 5000 सैन्य टुकड़ी के साथ हुमायुं की सेवा में भेज दिया।

बहादुर शाह से संघर्ष (1535-36ई०) -

→ गुजरात के शासक बहादुर शाह ने मेवाड़ पर 1535ई० मे आक्रमण कर दिया

→ मेवाड़ की राजमाता एवं मेवाड़ के शासक विक्रमजीत सिंह की माता कर्णवती ने हुमायु के नाम पत्र व राखी भेज सहायता मांगी

→ हुमायुं ने बहादुर शाह पर आक्रमण कर उसे पराजित किया तथा हुमायुं ने गुजरात, माण्डू व चम्पानेर पर अधिकार कर लिया।

शेरशाह से संघर्ष (1537-1540ई०)

चुनार के किले पर दूसरा घेरा (1538ई०)

→ गुजरात पर अधिकार करने के पश्चात हुमायुं आगरा आया तो कुतुब खाँ (शेरशाह का पुत्र) अपनी सैन्य टुकड़ी के साथ हुमायुं की सेना से निकलने मे कामयाब रहा तथा भागकर चुनार भाग आया।

→ हुमायुं ने दूसरी बार 1538ई० मे चुनार पर घेरा डाला परन्तु हिन्दुबेग नामक व्यक्ति ने शेरशाह सूरी व हुमायुं के बीच समझौता करा दिया।

→ इस समझौते में बिहार, बंगाल व चुनार का किला शेरशाह सूरी के अधिकार में आ गया जिसके बदले में शेरशाह प्रतिवर्ष 10 लाख रू हुमायुं को कर के रूप में देगा ऐसा निर्णय हुआ।

चौसा का युद्ध (26 जून 1539ई०)

→ जब हुमायुं बंगाल के विद्रोह को शान्त कर 7 माह बाद उत्तरापथ के मार्ग से आगरा आ रहा था तभी बक्सर के पास शेरशाह सूरी ने इसका मार्ग अवरुद्ध कर लिया

→ इन दोनो के बीच कर्मनाशा नदी के तट पर चौसा नामक स्थान पर युद्ध लड़ा गया (26 जून 1539ई०)। इस युद्ध मे हुमायुं पराजित हुआ तथा जान बचाने के लिए घोड़े सहित गंगा नदी में कूद गया

→ इसे गंगा मे डूबने से निजाम नामक भिश्ती ने बचाकर आगरा पहुंचाया। इस उपहार के बदले हुमायुं ने निजाम भिश्ती को आधे दिन के लिए बादशाह बनाया।

→ निजाम भिश्ती ने अपनी स्मृति मे चमड़े का सिक्का जारी किया था।
इस युद्ध के पश्चात, शेरशाह सूरी ने शेरशाह की धारण की।

कन्नौज अथवा बिलग्राम का युद्ध (17 मई 1540 ई०) -

→ इस युद्ध में भी हुमायु की पराजय हुई अब शेरशाह ने आगरा व दिल्ली पर अधिकार कर लिया
→ इस हार के बाद हुमायु भारत छोड़कर सिन्ध चला गया।

हुमायुँ का भारत से निष्कासित जीवन-

→ 1541 ई० में हिन्दाल के गुरू मीर अली अकबर बाबा की पुत्री हमीदा बानो बेगम से हुमायु ने विवाह किया।
→ 15 अक्टूबर 1542 ई० को अमरकोट के राजा पीरसाल के महल में हमीदा बानो ने अकबर को जन्म दिया
→ 1543 ई० में हुमायुं ने अकबर को माहमअनगा & जीजी अनगा को सौंपकर हमीदा बानो बेगम के साथ ईरान के शाह तहमास्प के दरबार में चला गया
→ 1545 ई० में हुमायुं ने तहमास्प से 17000 घुड़सवार सैनिक को प्राप्त करके अपने भाई कामरान से काबुल और कन्धार को छीन लिया।
→ 1554 ई० में पेशावर पर अधिकार कर हुमायु दिल्ली की ओर प्रस्थान किया।

मच्छीवारा का युद्ध -

→ 15 मई 1555 ई० को यह युद्ध पंजाब प्रान्त के लुधियाना जिले मे मच्छीवारा नामक स्थान पर हुमायु व अफगानो के बीच लड़ा गया जिसमे अफगानो का नेतृत्व तरतार खाँ ने किया तथा पराजित हुआ। अब पूरे पंजाब पर हुमायुं का कब्जा हो गया।

सरहिन्द का युद्ध (22 जून 1555 ई०) -

→ यह युद्ध अजमेर के पास सरहिन्द नामक स्थान पर द्वितीय अफगान वंश के अन्तिम शासक सिकन्दर शाह सूर व हुमायुं के मध्य लड़ा गया
→ सिकन्दर शाह सूर पराजित होकर पंजाब की पहाड़ियो मे छिप गया।
→ जुलाई 1555 ई० में हुमायुं दिल्ली पहुँचकर द्वितीय मुगल वंश की नींव डाली।

मृत्यु -

→ दिल्ली पर पुनः 6 माह शासन करने के पश्चात 24 जनवरी 1556 ई० को अपने ही द्वारा बनवाये गये दिल्ली के दीनपनाह या शेरमण्डल पुस्तकालय की सीढ़ियो से गिरकर वह घायल हो गया

→ 26 या 27 जनवरी 1556 ई० को हुमायूं की मृत्यु हो गयी

हुमायुं का मकबरा दिल्ली में स्थित है जिसे अकबर ने बनवाया

→ हुमायु के मकबरे मे सर्वप्रथम संगमरमर का प्रयोग हुआ

लेनपून ने हुमायु की मृत्यु पर लिखा है " वह जीवन भर ठोकर खाता रहा और अन्त: मे ठोकर खाकर ही उसकी मृत्यु हो गयी "

अन्य तथ्य -

→ गद्दी पर बैठने से पहले हुमायुं 'बदख्शाँ' का सूबेदार था

→ हुमायुं की सौतेली बहन गुलबदन बेगम ने 'हुमायुनामा' लिखी

→ अबुल फजल ने हुमायु को 'इन्सान-ए-कामिल' कहकर सम्बोधित किया।

सूर वंश / द्वितीय अफगान वंश (1540-55ई०)

द्वितीय अफगान वंश की नीव शेरशाह सूरी ने रखी

शेरशाह सूरी (1540-45ई०)

बचपन का नाम - फरीद खाँ
पिता - हसन खाँ
दादा - इब्राहिम शूर (घोड़े का व्यापारी)
उपाधियाँ - शेर खाँ, हजरत-ए-आला, शेरशाह
जन्म - 1472 ई० (पंजाब के बजवाड़ा में)

→ हसन खाँ (शेरशाह का पिता) हिसार (हरियाणा) के जागीरदार जमाल खाँ के यहाँ नौकरी करता था

→ सिकन्दर शाह लोदी ने जमाल खाँ को जौनपुर का जागीरदार नियुक्त कर दिया तो जमाल खाँ ने अपने अधीन हसन खाँ को हाजीपुर, सहसाराम, ख्वासपुर का जागीरदार बना दिया शेरशाह का अपने पिता हसन खाँ से झगड़ा हो गया जिसके पश्चात वह जौनपुर आकर 3 वर्षों तक अरबी, फारसी, हिन्दी व गणित की शिक्षाएं प्राप्त की

→ 1497 ई० में जमाल खाँ ने पिता व पुत्र के बीच समझौता करवाकर हाजीपुर भेज दिया

→ 21 वर्षों तक शेरशाह सूरी ने अपने पिता के कार्यों में हाथ बटवाया और प्रशासनिक कार्यों को भी किया।

→ शेरशाह सूरी अपनी सौतेली माताओं से झगड़ा कर 1518ई० में आगरा में दौलत खाँ लोदी के शरण मे चला गया

→ 1520 ई० में हसन खाँ की मृत्यु हो जाने पर सुल्तान इब्राहिम शाह लोदी ने शेरशाह को हाजीपुर का जागीरदार बना दिया।

→ शेरशाह सूरी का जागीर के बटवारे को लेकर सौतेले भाई सुलेमान से मतभेद हो जाने के कारण वह दक्षिणी बिहार के सुबेदार बहार खाँ लोहानी के यहा जाकर नौकरी करने लगा।

→ एक दिन बहार खाँ लोहानी के साथ शिकार खेलते समय एक बार में एक शेर को शेरशाह सूरी ने मार दिया। इस बहादुरी से प्रसन्न होकर बहार खाँ लोहानी ने शेरशाह सूरी को शेर खाँ की उपाधि तथा अपने अल्पवयस्क पुत्र जलाल खाँ का संरक्षक नियुक्त कर दिया।

→ 1526 ई० में बाबर ने मुगल वंश की नीव डाली उसी समय बहार खाँ लोहानी मुहम्मदशाह की उपाधि धारण करके दक्षिणी बिहार का स्वतन्त्र शासक बन बैठा।

→ शेरशाह की बढ़ती हुई प्रतिष्ठा से लोहानी सरदार शेरशाह से ईर्ष्या करने लगे जिससे शेरशाह मुगलो की सेना में भर्ती होकर चन्देरी के युद्ध में बाबर की ओर से युद्ध किया।

→ शेरशाह सूरी पुनः 1528 ई० में बहार खाँ लोहानी उर्फ मुहम्मद शाह के यहा चला गया

→ 1528 ई० मे बहार खाँ की मृत्यु हो जाने के पश्चात शेरशाह ने बहार खाँ की पत्नी दुदु से शादी करके हजरत-ए-आला की उपाधि धारण करके दक्षिणी बिहार का स्वामी बन बैठा।

→ शेरशाह सूरी ने 1530 ई० मे चुनार के किलेदार ताज खाँ की विधवा पत्नी लाडे मालिका से विवाह करके चुनार के किले पर अधिकार कर लिया।

राज्याभिषेक -

→ 17 मई 1540 ई० को कन्नौज अथवा बिलग्राम के युद्ध मे हुमायुं को पराजित करने के बाद 10 जून 1540 ई० को शेरशाह ने अपना राज्याभिषेक करवाया।

साम्राज्य विस्तार -

बंगाल विद्रोह (1541 ई०)

→ बगाल के तत्कालीन शासक मुहम्मद शाह की मृत्यु हो जाने के पश्चात- खिज्र खाँ ने बगाल मे अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी शेरशाह बगाल पहुंच खिज्र खाँ को कैद कर लिया तथा बगाल को 19 सरकारो (जनपदो) मे विभाजित कर दिया

→ प्रत्येक सरकार में शिकदार-ए-शिकदारान नामक पद का सृजन करके छोटे-छोटे सैन्य टुकड़ियो में विभाजित कर दिया प्रत्येक शिकदारो के उपर एक असैनिक अधिकारी अमीर (अमीन)-ए-बंगला के पद का सृजन किया

→ अमीर-ए-बंगला के पद पर सर्वप्रथम काजी फजीलात को नियुक्त किया गया था।

मालवा विजय (1542 ई०) -

→ शेरशाह सूरी ने बुन्देलखण्ड से उज्जैन के बीच मालवा क्षेत्र के शासक मल्लू खाँ उर्फ कादिरशाह पर आक्रमण किया तो कादिर शाह भयभीत होकर आत्मसमर्पण कर दिया।

रायसीन पर आक्रमण (1543 ई०) -

→ शेरशाह सूरी 1543 ई० मे बिहार राज्य के पाटलिपुत्र गया तथा उसने पाटलिपुत्र का नाम बदलकर पटना रखा।

→ वहा पहुचने पर उसे मालूम हुआ कि रायसीन के राजपूत राजा पूरनमल मुस्लिम महिलाओ को शहर में नाचने के लिए मजबूर कर दिया है।

→ यह खबर पाकर शेरशाह ने रायसीन पर आक्रमण करके विश्वासघात द्वारा पूरनमल को मारकर रायसीन पर अधिकार कर लिया।

→ 1543 ई० में शेरशाह सूरी का बड़ा बेटा कुतुब खां अपने पिता द्वारा किये गये विश्वासघात से दुखी होकर आत्महत्या कर लिया था।

मारवाड़ विजय (1544 ई०) -

→ 1544 ई० में शेरशाह सूरी ने अत्यधिक समयो तक मारवाड़ के किले का घेरा डाले रहा।

→ लम्बे समय तक घेरा डालने के बाद अन्तत: उसे सफलता तो मिली लेकिन अत्यधिक समय लग जाने के कारण शेरशाह सूरी ने कहा था कि "मैं मुट्ठी भर ज्वार (बाजरा) के लिए पूरा हिन्दुस्तान खो दिया"

कालिंजर पर आक्रमण (1545 ई०) -

→ 1544 ई० मे कालिंजर विजय हेतु शेरशाह ने प्रस्थान किया उस समय कालिंजर पर राजा कीरत सिंह शासन कर रहा था कीरत सिंह ने जब कोई प्रतिरोध नही किया तब शेरशाह सूरी ने 22 मई 1545 ई० को किले पर गोला बरसाने का आदेश दे दिया उसी वक्त एक गोला किले की दिवार से टकराकर वापस रखे हुए गोला बारूद पर आ गिरने से भयकर विस्फोट हुआ जिससे शेरशाह घायल हो गया व उसी दिन उसकी मृत्यु हो गयी।

→ शेरशाह को उसके द्वारा बनवाये गये सहसाराम (बिहार) के मकबरे में दफना दिया गया।

→ इस प्रकार गुजरात, कश्मीर, आसाम को छोड़कर शेष उत्तर भारत में शेरशाह का साम्राज्य फैला हुआ था। बंगाल सहित शेरशाह का पूरा साम्राज्य 47 सरकारो (जनपदो) में विभाजित था।

प्रशासन

साम्राज्य	–	सुल्तान
सूबा	–	सूबेदार
सरकार	–	शिकदार - ए - शिकदारान
परगना	–	आमिल / शिकदार
गांव / ग्राम	–	मुकद्दम / चौधरी

शेरशाह सूरी ने केन्द्रीय प्रशासन के संचालन के लिए पाँच प्रमुख विभागो की स्थापना की –

दीवान-ए-विजारत - यह विभाग वित्त विभाग से सम्बन्धित था अन्य विभागो में यह प्रमुख था जिसका नियन्त्रण अन्य सभी विभागो पर होता था। राज्य की आय और व्यय का लेखा जोखा रखना भी इस विभाग का कार्य होता था।

दीवान-ए-रिसालत - यह विदेश विभाग होता था जो राज्यो के साथ सम्बन्ध तथा अन्य कार्यवाहियो को सम्पादित करता था,

दीवान-ए-आरिज/अर्ज - यह सैन्य विभाग होता था। इस विभाग द्वारा सैनिको की भर्ती, वेतन, प्रशिक्षण व अन्य कार्यवाहियो को करने की जिम्मेदारी होती थी।

दीवान-ए-इंशा - यह आलेखन विभाग होता था। इस विभाग द्वारा सुल्तानो के आदेशो को लिपिबद्ध करके अन्य विभागो का सूचनार्थ भेजा जाता था

दीवान-ए-कजा - यह न्याय विभाग था।

भू-राजस्व कर -

→ शेरशाह सूरी ने भू राजस्व कर रैयतवाड़ी प्रथा के आधार पर वसूल किया था।

→ रैयतवाड़ी प्रथा के द्वारा किसानो से सीधे बात चीत करके भू राजस्व संग्रह किया किया जाता था इस प्रथा का प्रारम्भ सर्वप्रथम शेरशाह सूरी ने ही किया था

→ भू राजस्व कर पैदावार का 1/3 भाग वसूल किया जाता था परन्तु मुल्तान से 1/4 भाग ही भू राजस्व वसूला जाता था।

→ शेरशाह सूरी ने भूमि माप हेतु गज-ए-सिकन्दरी नामक ईकाइ का प्रयोग किया जो 32 अंगुल या 3/4 मीटर होता था

सड़क एंव सराय का निर्माण

"सड़क-ए-आजम"

4 सड़के –

1. पश्चिम बंगाल - (सोनार गाँव से अटक तक)
2. आगरा से बुरहानपुर तक
3. आगरा से चित्तौड़ तक
4. लाहौर से मुल्तान तक

→ उपर्युक्त सड़को का निर्माण शेरशाह सूरी द्वारा किया गया था इन सड़को को सड़क-ए-आजम कहा जाता था।

→ भारतीय गवर्नर जनरल लॉर्ड ऑकलैण्ड (1836 - 42ई०) ने सड़क - ए - आजम का नाम बदलकर ग्रांट ट्रंक रोड (G.T Road) रखा था।

→ उपर्युक्त सड़को पर शेरशाह सूरी ने 1700 सरायो का निर्माण करवाया था। दो सरायो के बीच की दूरी लगभग 3-4 मील की होती थी

→ इन सरायो से डाक व्यवस्थाएं भी संचालित की जाति थी।

न्याय व्यवस्था -

→ शेरशाह सूरी न्याय व्यवस्था का सबसे प्रमुख पदाधिकारी था। वह प्रत्येक बुद्दवार की शाम न्याय के लिए बैठता था। वह किसी प्रकार का भेद - भाव नही करता था

→ सुल्तान के नीचे के स्तर के मुकद्दमो को देखने के लिए दीवान - ए - काजी की नियुक्ति की गयी थी।

→ सरकारी स्तर के मुकदमो को देखने वाला अधिकारी मुन्सिफ - ए - मुंशिफान था।

गुप्तचर व्यवस्था

→ गुप्तचर व्यवस्था "दीवान - ए - बरीद" के अधीन होती थी जो प्रत्येक सूबो & सरकारो मे रहकर गुप्त संदेश वाहको के माध्यम से सूचनाएं एकत्रित करता था

साहित्य

→ मालिक मुहम्मद जायसी शेरशाह सूरी के दरबारी कवि थे इन्होने पद्‌मावत, अखरावट व आखिरी कलाम नामक काव्यो की रचना की

सिक्के

① चाँदी - नाम - रूपया वजन - 180 ग्रेन

② ताँबा - नाम - दाम वजन - 380 ग्रेन

स्थापत्य कला -

→ शेरशाह सूरी ने हुमायुं द्वारा बनवाये गये दीनपनाह भवन पर पुराने किले का निर्माण करवाया तथा उस किले के अन्दर किला - ए - कुहना नामक मास्जिद का निर्माण करवाया

→ बिहार मे - रोहतासगढ़ का किला बनाया

→ शेरशाह सूरी ने कन्नौज नगर को बरबाद करके शेरशाह सूर नगर बसाया व 1543 ई० मे पाटलिपुत्र का नाम बदल पटना रखा।

जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर [1556-1605ई०]

जन्म - 15 अक्टूबर 1542ई० अमरकोट के राजा वीरसाल के महल में
माता - हमीदा बानो बेगम
पिता - हुमायुँ
शिक्षा - अनपढ़
प्रथम संरक्षक - मुनीम खाँ
द्वितीय संरक्षक - बैरम खाँ

राज्याभिषेक → अकबर का राज्याभिषेक 14 फरवरी 1556ई० को कलानौर (पंजाब) में बैरम खाँ के संरक्षण में कासिम बेग तबरीजी ने ईंटो का महल बनवाकर करवाया
हुमायुं की मृत्यु के समय अकबर कलानौर में था।

हेमचन्द्र उर्फ हेमू - यह रेवाड़ी का रहने वाला नमक व्यापारी था। इस्लाम शाह के शासनकाल मे माप-तौल का अधिकारी हो गया था तत्पश्चात आदिलशाह ने उसे अपना प्रधानमंत्री & सेनापति नियुक्त कर दिया था

→ हेमु कुल 24 युद्धो में भाग लिया था जिसमे से उसे 22 युद्धो में विजय प्राप्त हुई

→ हेमू ने हुमायुं की मृत्यु के बाद आगरा व दिल्ली पर अधिकार करके दिल्ली में अपना राज्याभिषेक करवाया

→ 5 नम्बर 1556 ई० को हेमू पानीपथ के प्रथम युद्ध मे बैरम खाँ द्वारा पराजित हुआ तथा मारा गया।

पानीपथ का द्वितीय युद्ध (5 नवम्बर 1556ई०)

→ पानीपथ का द्वितीय युद्ध 5 नवम्बर 1556ई० को अकबर (बैरम खाँ) और हेमू के बीच लड़ा गया जिसमे हेमू पराजित हुआ व मारा गया

→ नोट 1- विक्रमादित्य की उपाधि धारण करने वाला अन्तिम और चौदहवां शासक हेमू था।
2- दिल्ली के सिंहासन पर बैठने वाला अंतिम हिन्दू शासक हेमू था।

बैरम खाँ के संरक्षण का काल (1556-60ई०) -

बैरम खाँ शिया संम्प्रदाय का पर्शिया का रहने वाला था
कन्नौज के युद्ध से यह हुमायु की सेवा में आ गया था
अकबर ने उसे वकील (प्रधानमंत्री) का पद तथा खान-ए-खाना की उपाधि प्रदान की।
बैरम खाँ की बढ़ती हुई प्रतिष्ठा से माहम अनगा ईर्ष्या करने लगी

→ माहम अनगा के कहने पर अकबर ने बैरम खाँ के सामने तीन प्रस्ताव रखे

1- मेरा विशेष सलाहकार बन जाओ
2- चन्देरी & कालपी के सूबेदार बन जाओ
3- मक्का चले जाओ

→ बैरम खाँ ने मक्का जाने के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया

→ 1560 ई० में मक्का जाते समय गुजरात के पाटन नामक स्थान पर मुबारक खाँ द्वारा हत्या कर दी गई।

→ बैरम खाँ की पत्नी सलीमा बेगम & पुत्र अब्दुल रहीम को आगरा लाया गया।

→ अकबर ने सलीमा बेगम से विवाह कर लिया और अब्दुल रहीम का पुत्र की भाँति पालन-पोषण किया।

पेटीकोट शासन / महिलाओ का शासन / हरमदल का शासन या पर्दा शासन →

→ 1560 से 1564 ई० तक के अकबर के शासन काल को पर्दा शासन कहा गया।

→ इस शासन को महिलाओ का शासन, हरमदल का शासन या पेटीकोट शासन भी कहा जाता है।

→ इस शासन की सर्वेसर्वा 1560-62 ई० तक माहम अनगा रही परन्तु 1562 ई० मे माहम अनगा की मृत्यु हो जाने के बाद अकबर ने नीतिगत निर्णय लेना प्रारम्भ कर दिया।

→ पर्दा शासन के समय अकबर का प्रधानमंत्री हिन्दू राजा टोडरमल था।

→ पर्दा शासन के अन्तर्गत रहते हुए अकबर ने निम्न कार्य किया—

- 1562 ई० में अकबर शेख मुइनुद्दीन चिश्ती का दर्शन करने के लिए अजमेर जा रहा था कि मार्ग में आमेर (जयपुर) के राजा बिहारी मल या भारमल ने अकबर की अधीनता स्वीकार करते हुए अपनी पुत्री मरियम उज्जमानी या जोधाबाई से विवाह का प्रस्ताव रखा जिसे अकबर ने स्वीकार कर लिया। इसी से उत्पन्न पुत्र जहाँगीर था।
- 1562 ई० में अकबर ने दास प्रथा के व्यापार पर रोक लगा दिया
1564 ई० में अकबर ने जजिया कर पर प्रतिबंध लगा दिया।
1563 ई० में हिन्दुओं से लिया जाने वाला तीर्थयात्रा कर समाप्त कर दिया।

अन्य कार्य -

→ अकबर ने शेख सलीम चिश्ती से प्रभावित होकर 1570ई० मे फतेहपुर सिकरी को बसाया तथा उसे 1571ई० मे अपनी राजधानी बनाया।

→ 1575 ई० में अकबर ने फतेहपुर सिकरी में इबादत खाना (पूजा गृह) का निर्माण करवाया था ताकि सभी धर्मों के सार को सुनकर धार्मिक भेदभाव को दूर किया जा सके

→ अकबर प्रत्येक बृहस्पतिवार की रात धार्मिक विद्वानो से धार्मिक बातो को सुना करता था।

→ 1579ई० में अकबर ने फतेहपुर सीकरी की जामा मस्जिद मे जाकर मजहर की घोषणा कर दी कि "अल्लाह ओ अकबर" अर्थात - ईश्वर महान है

दीन ए इलाही धर्म - (1582ई०)

→ अकबर ने 1582 ई० में तौहीद - ए - ईलाही (दैवी एकेश्वरवाद) की घोषणा की जो बाद में दीन-ए-ईलाही (ईश्वर का धर्म) के नाम से विख्यात हुआ

→ इस धर्म की रूपरेखा मुबारक खां & फैजी ने तैयार किया था।

→ इस धर्म का पुरोहित अबुल फजल था

→ इस धर्म को अपनाने वाला एक मात्र हिन्दू बीरबल (महेशदास) था।

→ मानसिंह व राजा भगवान दास ने इस धर्म को स्वीकार करने से इनकार कर दिया था।

→ दीन - ए - इलाही संवत - (1583ई०) - 1583ई० मे अकबर द्वारा इस शवत - को चलाया गया।

साम्राज्य विस्तार -

मालवा विजय (1562ई०) -

→ मालवा विजय हेतु अकबर ने अधम खां के नेतृत्व मे एक सेना भेजी उस समय मालवा का शासक बाजबहादुर था

→ अधम खां ने बाजबहादुर को पराजित कर लिया तथा जब उसकी पत्नी रानी रूपमती को लाने की कोशिस कर रहा था तो रूपमती ने आत्महत्या कर ली।

→ अकबर द्वारा अब्दुल्ला खां उजबेग के नेतृत्व में मालवा

को अन्तिम रूप से जितने हेतु सेना भेजी गयी। जिसने अन्तिम रूप से मालवा को जीत लिया।

मेवाड़ अभियान -

→ सर्वप्रथम 1567 ई० में अकबर ने मेवाड़ पर आक्रमण किया उस समय वहाँ का शासक उदय सिंह था

→ उदयसिंह चित्तौड़ का किला राजा जयमल को सौंपकर जंगलो में भाग गया।

→ मुगलो द्वारा जयमल मारा गया और मुगलो ने मेवाड़ पर अधिकार कर लिया।

हल्दी घाटी का युद्ध (18 जून 1576 ई०) -

→ यह युद्ध राजस्थान प्रान्त के अरावली पहाड़ियो की एक शाखा के बीच हल्दी घाटी नामक स्थान पर महाराणा प्रताप एवं अकबर के बीच लड़ा गया। राणा बचकर पहाड़ियो मे चले गये।

→ इस युद्ध में महाराणा प्रताप की पराजय हुई

→ 1597 ई० में महाराणा प्रताप की मृत्यु हो गई।

गुजरात विजय -

→ अकबर ने 1572 ई० में गुजरात पहुँचकर वहाँ के शासक मुजफ्फर खाँ III को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर कर दिया और अहमदाबाद पर अधिकार करके अजीज कोका को गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया तथा वह आगरा चला गया।

→ अकबर को तुरन्त संदेश मिला की गुजरात में विद्रोह प्रारम्भ हो गया है अत: अकबर ने फतेहपुर सिकरी से गुजरात के बीच की दूरी 450 मील को मात्र 9 दिनो में तय करके विद्रोहियो को परास्त कर पुन: अजीज कोका को गुजरात का सूबेदार बना दिया

→ यह विश्व इतिहास में सबसे तीव्र गति से लड़ा जाने वाला युद्ध था

→ इसी अभियान के समय अकबर ने पहली बार समुद्र देखा व पुर्तगालियो से मिला था।

→ गुजरात विजय के पश्चात अकबर ने इल्तुतमिश के द्वारा बनवाये गये जोधपुर नागौर (राजस्थान) में अतारकिन के दरवाजे से प्रभावित होकर फतेहपुर सिकरी मे बुलंद दरवाजे का (176 फीट) निर्माण करवाया था।

काबुल विजय (1581ई०)-

→ अकबर का सौतेला भाई हकीम मिर्जा ने 1567 में काबुल पर आक्रमण किया किन्तु असफल हुआ

→ 1581ई० में उसने पुनः आक्रमण किया तो मानसिंह के नेतृत्व वाली मुगल सेना ने उसे आत्मसमर्पण करने पर विवश कर दिया इस प्रकार काबुल को मुगल सल्तनत में मिला लिया गया।

कश्मीर विजय (1586ई०)

→ कश्मीर का शासक याकूब खॉ ने अकबर की अधिनता स्वीकार कर ली।

सिन्ध विजय - 1593ई०मे अब्दुर्रहीम खानखाना के नेतृत्व में सिन्ध को जीता गया।

कन्धार विजय - मुगल सेना ने शाह बेग के नेतृत्व मे वहा के शासक मुजफ्फर हुसैन को हरा कर 1595 मे कन्धार को जीत लिया।

-: दक्षिण भारत की विजय :-

→ उत्तर भारत की विजयो से उत्साहित होकर अकबर ने दक्षिण भारत के राज्यो को अपनी अधिनता स्वीकार करने के लिए पत्र-व्यवहार किया जिसमे खानदेश के शासक अली खॉ ने 1591ई० में अकबर की अधीनता को स्वीकार कर लिया

→ बीजापुर, गोलकुण्डा, अहमदनगर, बरार ने निष्ठापूर्वक अधीनता स्वीकार करने से इन्कार कर दिया।

→ 1600ई० मे अहमदनगर की तत्कालीन शासिका चॉद बीबी को पराजित करके अकबर ने अहमदनगर पर अधिकार कर लिया।

→ अहमनगर के युद्ध में खानदेश के शासक अली खॉ ने मुगलो की ओर से लड़ते हुए मारा गया।

→ 1601ई० मे अकबर ने असीरगढ़ के किले पर अधिकार कर लिया। कहा जाता है कि अकबर ने असीरगढ़ के किले के ताले को सोने की चाभी से खोला था।

→ खानदेश के शासक अली खॉ का पुत्र मीरन बहादुर शाह ने स्वतन्त्रता की घोषणा कर असीरगढ़ पर अधिकार कर लिया था इसलिए अकबर ने असीरगढ़ पर आक्रमण कर उसे जीता मीरन बहादुर ने अधीनता को स्वीकार कर लिया।

→ नोट- असीरगढ़ का युद्ध अकबर द्वारा लड़ा गया अंतिम युद्ध था।

मनसबदारी प्रथा -

- इस प्रथा की सुरूआत अकबर के द्वारा सर्वप्रथम 1595-96 मे किया गया था
- मनसबदार शब्द का प्रयोग ऐसे व्यक्तियो के लिए होता था जिन्हे कोई मनसब यानी कोई सरकार हैसियत अथवा पद मिलता था
- अबुल फजल के अनुसार मनसबो की 66 श्रेणिया थी।
- अकबर ने मनसबदारो की 2 श्रेणिया बनायी
  (1) जात (2) सवार
- जात की संख्या पर ही पद और वेतन का निर्धारण किया जाता था
- सवार से यह निर्धारित होता था कि संबंधित अधिकारी के अन्तर्गत कितनी सेना है।
- प्रत्येक जात को अपने अधीन सेनाओ को रखने की संख्या निश्चित कर दिया
- सबसे छोटा मनसब 10 व सबसे अधिक 10 हजार का था

भूमि सुधार बन्दोबस्त कार्य (1580 ई०)

- 1580 मे अकबर ने गुजरात मे आइन-ए-दहशाला कार्यक्रम को प्रारम्भ किया उस कार्य को भूमि सुधार या भू-राजस्व कार्यक्रम भी कहा जाता है।
- इस कार्य के लिए राजा टोडरमल को नियुक्त किया गया
- अकबर ने इस कार्य के लिए गज-ए-इलाही नामक पैमाने को चलाया जो 41 अंगुलि की होती थी जो बांस की डंडियो तथा लोहे के राड से बनाई जाती थी।

जब्ती प्रथा -

- इस प्रथा द्वारा किसानो की भूमि की पैमाइश करवाकर पिछले 10 वर्षो की पैदावार के आधार पर अगले 10 वर्षो के लिए जो भू-राजस्व तय किया जाता था व जब्ती प्रथा के अन्तर्गत आता था
- यह व्यवस्था गुजरात & कन्धार में लागू की गयी
- भू-राजस्व की दर 1/3 निश्चित की गई।

नम्स या कानकूत या बटाई प्रथा -

- गल्ला के आधार पर जो भू-राजस्व वसूला गया उसे नम्स, कानकूत या बटाई प्रथा कहा जाता है।
- यह व्यवस्था अकबर के साम्राज्य के मध्य क्षेत्रो में लागू की गई थी।

सलीम का विद्रोह (1599 ई०)

→ सलीम उर्फ जहाँगीर ने 1599 ई० में विद्रोह करके राजगद्दी प्राप्त करने के लिए इलाहाबाद चला गया वह 1602 ई० तक इलाहाबाद में रहा

→ सलीमा बेगम ने इलाहाबाद जाकर उसे समझाकर 1602 ई० में आगरा ले आई। अकबर ने उसे माफ कर दिया।

मृत्यु - अक्टूबर 1605 ई० में अकबर बीमार हुआ। जब उसे लगा की मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं होगा तो वह 21 oct 1605 ई० को जहाँगीर को उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया 25 oct 1605 ई० को अकबर की मृत्यु हो गई।

→ अकबर का मकबरा आगरा से 10 मील की दूरी पर सिकन्दरा में है।

→ इस मकबरे का निर्माण जहाँगीर के शासन काल में करवाया गया

→ वहा पाँच मंजिलो वाला सफेद संगमरमर से बना गुम्बद वाला मकबरा बनवाया गया था।

-: अकबर कालीन कला एवं संस्कृति :-

संगीत - अकबर को संगीत में रूचि थी। वह हिन्दू गायक लाल कलावन्त से हिन्दू गायन पद्धति का ज्ञान प्राप्त किया

→ तानसेन - तानसेन का मूल नाम रामतनु पाण्डेय था वह ग्वालियर का रहने वाला हिन्दू ब्राह्मण था। बाद में इस्लाम धर्म स्वीकार करने के पश्चात तानसेन के नाम से संगीत की दुनिया में अपने नाम का परचम लहराया। तानसेन का अकबर से परिचय रीवा के राजा रामचन्द्र देव ने करवाया था। तानसेन अकबर के नवरत्नो में एक थे।

→ तानसेन को अकबर ने मिर्जा $ कंठभारण वाणी विलास की उपाधियाँ प्रदान की

कला –
1. स्थापत्य / वास्तुकला
2. चित्रकला

स्थापत्य कला → अकबर के प्रमुख वास्तुकार
1. कासिम खाँ
2. बहाउद्दीन

→ आगरा का किला - यह लाल बलुए पत्थर से बनवाया गया था
इस किले का मुख्य वास्तुकार कासिम खाँ थे
इस किले में दो दरवाजे थे। पश्चिम के दरवाजे को दिल्ली दरवाजा तथा पूर्व के दरवाजे को अमरसिंह दरवाजा कहा गया
इस किले के अन्दर जहाँगीर भवन व अकबरी भवन को भी निर्मित करवाया था।

→ लाहौर का किला, अटक का किला, अजमेर का किला, अल्लाहाबाद (इलाहाबाद) का किला, इलाहाबाद का बाँध
→ इन सभी को अकबर ने बनवाया था
→ इलाहाबाद का नाम अल्लाहाबाद अर्थात - अल्लाह का नगर रखा था।

फतेहपुर सीकरी की स्थापत्य कला -

→ फतेहपुर सीकरी के प्रमुख वास्तुकार बहाउद्दीन थे।
→ फतेहपुर सीकरी में अकबर ने दीवाने आम, दीवाने खास, पंचमहल (हवा महल), जोधा का महल, बुलंद दरवाजा तथा जामामस्जिद का निर्माण करवाया था
→ जामा मस्जिद के आंगन में शेख सलीम चिश्ती का मकबरा निर्मित करवाया था
→ इसी जामा मस्जिद से अकबर ने 1579ई० मे महजर की घोषणा की।

चित्रकला -

→ हुमायु जब ईरान से भारत आया तो वह दो ईरानी चित्रकारों अब्दुस्समद व सैय्यद अली को भारत लेकर आया था।
→ मीर सैय्यद अली को अकबर का शिक्षक नियुक्त कर दिया इसने अकबर को चित्रकला के प्रति गहरी रूचि पैदा कर दी।
→ अबुल फजल कृति आइन-ए-अकबरी के अनुसार इन दोनो को छोड़कर 15 चित्रकार अकबर के दरबार में रहते थे जिसमें से 13 हिन्दू थे।

प्रमुख चित्रकार - अब्दुस्समद, मीर सैयद अली, बिशनदास, बसावन, दशवन्त व दौलत मनोहर इत्यादि

→ दशवन्त ने मानसिक रूप से पागल होकर अपनी आत्महत्या कर लिया।
→ अकबर ने चित्रकला पर हम्जनामा नामक ग्रन्थ तैयार करवाया था।
→ अकबर ने आगरा में चित्रशाला (चित्रकला बिभाग) की स्थापना करके उसका अध्यक्ष अब्दुस्समद को बनाया था। अब्दुस्समद को फतेहपुर सिकरी के टकसाल बिभाग का प्रमुख भी नियुक्त किया तथा अब्दुस्समद को सीरी कलम की उपाधि प्रदान किया था।
→ इसके शासनकाल मे भित्ति चित्रकारी (wall painting) का प्रारम्भ हुआ

साहित्य-

→ अकबर ने तुर्की भाषा, अरबी भाषा, संस्कृत भाषा में लिखे ग्रन्थो का फारसी भाषा में अनुवाद करवाने के लिए अनुवाद बिभाग की स्थापना किया था।

तुजुक-ए-बाबरी (वाकियात-ए-बाबरी या बाबरनामा)-

→ इसका फारसी भाषा में अनुवाद सर्वप्रथम पायन्दा खाँ तथा उसके बाद अब्दुर्रहीम खानखाना ने किया था।

→ रामायण (आदिकाव्य) का फारसी भाषा में अनुवाद अब्दुल कादिर बदांयूनी ने किया था।

→ महाभारत का फारसी में अनुवाद रज्मनामा शीर्षक से अब्दुल कादिर बदायूनी व नकीब खाँ ने किया था।

अथर्ववेद का फारसी में अनुवाद हाजी इब्राहिम सरहिन्दी ने किया था।

→ **नोट**- रामायण का तमिल भाषा मे अनुवाद कम्बन ने तथा महाभारत का तमिल भाषा मे अनुवाद पेरून्न देवनार ने किया था।

→ रामायण का बांग्ला भाषा में अनुवाद कृतिवास ने किया था तथा महाभारत का बांग्ला भाषा में अनुवाद बंगाल के शासक नुसरतशाह के समय कवीन्द्र परमेश्वर ने किया

इतिहासकार	ग्रन्थ	भाषा
- अबुल फजल	अकबरनामा (आइने अकबरी)	फारसी
- निजामुद्दीन अहमद	तबकात-ए-अकबरी	फारसी
- अब्दुल कादिर बदांयूनी	मुन्तखबाब-उल-त्वारिख	फारसी

हिन्दी भाषा के कवि-

→ अकबर ने हिन्दी भाषा के साहित्यकारो को भी प्रश्रय प्रदान किया जिसमें, तुलसीदास, सूरदास, रसखान व अब्दुर्रहीम खानखाना थे

→ तुलसीदास ने अकबर के काल में 1574-76 ई० में रामचरित मानस की रचना की थी

→ हिन्दी भाषा की प्रगति के आधार पर अकबर के काल को हिन्दी भाषा का स्वर्ण काल कहा जाता है।

अकबर कालीन मुद्रायें -

सोना - (1) शंसब (अकबर काल का सबसे बड़ा सोने का सिक्का)
(2) मुहर (इसे शंहशाह भी कहा जाता था)

चाँदी - (1) जलाली (वर्गाकार सिक्का)
(2) इलाही (वृत्ताकार सिक्का)

ताँबा - (1) दाम
(2) जीतल

→ अकबर ने अपने सिक्को पर सूर्य व चन्द्र की उपासना में पद्य में लेख लिखवाया था

→ सिक्को पर राम व शिया की आकृति तथा उनके नामो का भी अंकन करवाया था।

→ अकबर ने सीता व राम की आकृति एवं राम सीता लिखे हुए सिक्को को भी जारी किया था।

-: अकबर के नवरत्न :-

(1) बीरबल - बचपन का नाम महेशदास। एकमात्र हिन्दु जिसने दीन ए इलाही धर्म स्वीकारा

(2) अबुल फजल - अकबरनामा व आइने अकबरी ग्रन्थो की रचना की दीन-ए-ईलाही धर्म के मुख्य पुरोहित

(3) तानसेन - संगीत सम्राट कहा जाता है। इनके समय मे ध्रुपद गायन शैली का विकास हुआ। मृत्यु - 1589 ई०

(4) अब्दुर्रहीम खानखाना - यह बैरम खाँ के पुत्र थे इन्होने बाबरनामा का फारसी में अनुवाद किया।

(5) फैजी - दीन-ए-ईलाही धर्म की रूपरेखा बनाया था। तथा गणित की पुस्तक लीलावती का फारसी मे अनुवाद किया

(6) हकीम खाँ हुमाम - (रसोईघर के प्रबंधक का कार्य)

(7) मानसिंह

(8) राजा टोडरमल

(9) मुल्ला दो प्याजा

नोट - अबुल फजल की हत्या वीर सिंह बुन्देला ने किया था।

नुरूद्दीन मुहम्मद जहाँगीर बादशाह गाजी
(1605 - 1627) ई०

जन्म - 30 Aug 1569 ई० (फतेहपुर सिकरी मे) शेख सलीम चिश्ती के आशीर्वाद से
बचपन का नाम - सलीम
अकबर द्वारा - शेखू बाबा (अकबर द्वारा प्यार से बुलाया जाता था)
पिता का नाम - अकबर
माता का नाम - मरियम उज्जमानी (जोधाबाई या हरखाबाई)
शिक्षक - अब्दुर्रहीम खानखाना

विवाह -

(1) → 1585 मे आमेर के राजा भगवान दास की पुत्री मानबाई के साथ। इसी से खुसरो पैदा हुआ था
→ मानबाई को जहाँगीर ने शाह बेगम की उपाधि दी थी
→ जहाँगीर की अत्यधिक शराब की आदतो की वजह से तंग आकर मानबाई ने आत्महत्या कर ली
→ मानबाई को इलाहाबाद के खुल्दाबाद मे दफना दिया गया।
(2) → 1586 ई० में जहाँगीर ने मारवाड के शासक मोटा राजा उदयसिंह की पुत्री जगत गोसाईं (जोधाबाई या भानमति) से विवाह किया।
→ इसी से खुर्रम (शाहजहाँ) पैदा हुआ था
→ शाहिब ए जमाल से परवेज पैदा हुआ था
→ एक रखैल से शहरयार पैदा हुआ था

जहाँगीर के पांच पुत्र थे - खुसरो, परवेज, खुर्रम, शहरयार व जहाँदार

नोट - जहाँगीर अनारकली से प्रेम करता था। 1615 ई० मे अनारकली की याद में उसने लाहौर में एक सुन्दर कब्र बनवाया और उस पर लिखवाया "यदि मैं अपनी प्रेयसी का चेहरा एक बार पुन: देख पाता तो कयामत के दिन तक अल्लाह को धन्यवाद देता।

अनारकली का विवरण देने वाला एक मात्र विदेशी यात्री विलियम फिंच है।

आईन-ए-जहाँगीरी →

→ यह जहाँगीर द्वारा फारसी भाषा में लिखित ग्रन्थ है।
→ बादशाह बनने के बाद जहाँगीर ने 12 अध्यादेश जारी किये इन बारह अध्यादेशो की संकलित पुस्तक ही आईन-ए-जहाँगीरी है।

→ जहाँगीर ने आगरे के किले के शाहबुर्ज या मुसम्मन बुर्ज भवन से यमुना नदी के तट पर 60 घण्टियों वाली सोने की बनी हुई एक न्याय की जंजीर लगवाया था

→ इसे बजाकर कोई भी व्यक्ति न्याय माँग सकता था।

इसके अतिरिक्त जहाँगीर ने कर्मचारियों को निम्न आदेश दिये –

→ प्रत्येक नगरो में अस्पताल खोले जाए एवं उसमे उच्चकोटि के चिकित्सको की नियुक्ति की जाए।

→ किसानो की जमीनो पर जबरजस्ती अधिकार न किया जाए

→ साधारण अपराध के लिए किसी के नाक व कान न काटे जाएें

→ किसी व्यापारी के सामान का परीक्षण उसकी अनुमति के बाद ही होना चाहिए।

→ सभी गाँवो व नगरो के पास कुंओ का निर्माण होना चाहिए

→ तम्बाकू के सेवन पर प्रतिबंध लगाया।

खुसरो का विद्रोह (1606 ई०) –

→ जहाँगीर के सबसे बड़े पुत्र खुसरो ने अपने मामा सेनापति मानसिंह व गुजरात के सूबेदार व श्वसुर अजीज कोका के सहयोग से विद्रोह कर दिया।

→ इस विद्रोह में सिख सम्प्रदाय के पांचवे गुरू अर्जुनदेव ने भी खुसरो की आर्थिक मदद की

→ जहाँगीर को जब खुसरो के विद्रोह की खबर मिली तो उसे बन्दी बनाकर लाहौर से आगरा लाया गया तथा उसकी आंखे फोड़वा दी गई

→ वह आजीवन 1621 तक कैदी रहा और अन्तत: उसकी मृत्यु हो गई

→ खुसरो को इलाहाबाद के खुल्दाबाद में उसकी माता मानबाई के कब्र के पास दफना दिया गया।

→ इसी के नाम पर उसका नाम खुसरोबाग रखा गया

→ खुसरो की सहायता करने के कारण जहाँगीर ने गुरू अर्जुनदेव को आगरा के किले में 1606 ई० में फांसी दे दी।

खुर्रम का विद्रोह –

→ 1622 ई० में शाह अब्बास प्रथम ने कंधार पर कब्जा कर लिया अत: जहाँगीर ने खुर्रम (शाहजहाँ) को वहाँ जाने को कहा

→ शाहजहाँ को इस बात का डर था कि उसकी अनुपस्थिति में नूरजहाँ उसे सत्ता से दूर कर देगी। इस मुद्दे को लेकर पिता पुत्र में मतभेद हो गया

→ अत: शाहजहाँ ने विद्रोह कर दिया किन्तु महावत खाँ ने इस विद्रोह

को दबा दिया

→ 1625 ई० में जहाँगीर ने खुर्रम को माफ कर दिया

महाबत खाँ का विद्रोह -

→ महाबत खाँ व राजकुमार परवेज की घनिष्ठता को देख नूरजहाँ अत्यन्त चिन्तित थी

→ माना जाता है कि जब जहाँगीर काबुल जा रहा था तो महाबत खाँ ने उसे अपने गिरफ्त मे ले लिया किन्तु नूरजहाँ की कूटनीति के कारण महाबत खाँ असफल हुआ।

जहाँगीर के दरबार में आने वाले विदेशी यात्री -

विलियम हॉकिन्स (1608 ई०) -

→ यह इंग्लैण्ड के सम्राट जेम्स प्रथम का राजदूत बनकर पानी के जहाज से 1608 ई० में सूरत बन्दरगाह पर उतरा

→ वह जहाँगीर के आगरा दरबार में आया था

→ वह जहाँगीर से फारसी व तुर्की भाषाओं मे बात किया जिससे प्रसन्न होकर बादशाह ने उसे इंग्लिश खाँ, फिरंगी खाँ की उपाधि व 400 का मनसब प्रदान किया

→ जहाँगीर ने उसे सूरत में व्यापार करने की अनुमति प्रदान की।

पॉल केनिंग (1612 ई०)

→ जेम्स प्रथम का दूसरा दूत बनकर आया

विलियम एडवर्ड (1615 ई०)

→ तीसरा अंग्रेज दूत

सर टॉमस रो (1615 ई०)

→ सर टॉमस रो भी जेम्स प्रथम का राजदूत बनकर जहाँगीर के अजमेर दरबार में भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से बातचीत करने के लिए आया

→ अपनी व्यापारिक सुविधाओं को प्राप्त करने हेतु इसने नूरजहाँ, आसफ खाँ व खुर्रम को बहुमूल्य उपहार दिये।

मृत्यु :-

→ जहाँगीर की मृत्यु 7 नवम्बर 1627 ई० को भीमवारा (पंजाब) नामक स्थान पर हो गयी।

→ जहाँगीर को शाहदरा (लाहौर) में रावी नदी के तट पर दफना दिया गया। जहाँ नूरजहाँ ने बाद में जहाँगीर के मकबरे को निर्मित करवाया।

-: नूरजहाँ :-

बचपन का नाम (मूल नाम) - मेहरून्निसा
जन्म - 1577 ई० मे कन्धार (अफगानिस्तान) मे
पिता - गियास बेग

→ गियास बेग को जहाँगीर ने एतमादउद्दौला की उपाधि प्रदान की थी।

माता - असमत बेगम

→ असमत बेगम ने गुलाब से इत्र निकालने का आविष्कार किया तथा नूरजहा को भी गुलाब से इत्र निकालना सिखाया

भाई - आसफ खाँ
पति - अली कुली बेग (शेर-ए-अफगान)
पुत्री - लाडली बेगम

→ नूरजहां का विवाह 1594 ई० में अकबर के शासन काल मे अली कुली बेग से हुआ था

→ अली कुली बेग जहाँगीर के साथ मेवाड़ के अभियान पर गया था वहीं पर उसने एक शेर को मार दिया। इस कार्य से प्रसन्न होकर जहाँगीर ने उसे शेर-ए-अफगान की उपाधि दी

→ 1607 ई० में कुतुबुद्दीन खाँ (बंगाल का गवर्नर) ने बर्द्धमान के जागीरदार शेर-ए अफगान (अली कुली बेग) की अंगरक्षकों द्वारा हत्या करवा दी।

→ जहाँगीर ने शेर-ए अफगान की विधवा पत्नी मेहरून्निसा व उसकी पुत्री लाडली बेगम को आगरा बुलवा लिया तथा मेहरून्निसा का अकबर की पत्नी सलीमा बानू बेगम की सेविका के रूप में नियुक्त कर दिया।

मेहरून्निसा (नूरजहाँ) से जहाँगीर का विवाह -

→ 1611 ई० मे नौरोज के त्योहार पर जहाँगीर ने पहली बार मेहरून्निसा को देखा तथा उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखा जिसे मेहरून्निसा ने स्वीकार कर लिया।

→ नूरजहां ने अपने विवाह हेतु विशेष पोषाक 'नूरमहली' स्वयं बनवायी थी

→ 1611 ई० में जहाँगीर ने मेहरून्निसा को नूरमहल (प्रसाद ज्योति) तथा 1616 ई० में नूरजहाँ (जगज्योति) की उपाधि प्रदान किया।

नूरजहाँ का काल

① **नूरजहाँ गुट (1611-1622 ई०)** - अपने विवाह के कुछ ही वर्षों बाद नूरजहाँ ने अपना दल बना लिया जिसे नूरजहाँ गुट या जुंतागुट कहा जाता है। 1621 ई० मे उसकी माता असमत बेगम व 1622 ई० में उसके पिता गियास बेग की मृत्यु हो जाने के बाद नूरजहाँ गुट 1622 ई० में समाप्त हो गया।

नूरजहाँ के गुट में सामिल थे - खुर्रम, आसफ खाँ, असमत बेगम व गियास बेग

② **विद्रोह का काल (1622-1627 ई०)** -
(1) खुर्रम का विद्रोह (1622-26 ई०)
(2) महावत खाँ का विद्रोह (1626 ई०)

जहाँगीर कालीन कला -

1- स्थापत्य कला -

① **अकबर का मकबरा** - जहाँगीर कालीन स्थापत्य कला के क्षेत्र में यह पहला उदाहरण है। यह मकबरा आगरा से दिल्ली रोड पर सिकन्दरा में स्थित है। इस मकबरे मे कुल 5 तल हैं परन्तु यह एक बिना गुम्बद वाला मकबरा है। इसे सफेद संगमरमर का प्रयोग कर बनाया गया।

② **एतमाउद्दौला का मकबरा** - आगरा में स्थित इस मकबरे का निर्माण नूरजहाँ ने 1626 ई० में बेदाग संगमरमर से करवाया।

③ **जहाँगीर का मकबरा** - जहाँगीर का मकबरा लाहौर में रावी नदी के तट पर शहादरा नामक स्थान पर है जिसे नूरजहाँ ने बनवाया था (1 तल)। इसी मकबरे में 1645 ई० नूरजहाँ की मृत्यु हो जाने के बाद उसे दफना दिया गया

2 - चित्रकला -

जहाँगीर के काल को चित्रकला का स्वर्ण युग कहा जाता है। तुजुक-ए-जहाँगीरी के अनुसार जहाँगीर चित्रकला का इतना बड़ा पारखी था कि वह एक चित्र में अनेक चित्रकारो द्वारा बनाए गये अंगों को बता देता था कि किस अंग को किस चित्रकार ने बनाया है।

जहाँगीर के प्रमुख चित्रकार - बिशनदास, शाहमसूर, अबुल हसन, गोवर्धन, फारुख बेग व दौलत इत्यादि

→ अबुल हसन मानव चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध थे वे फारस के शाह तथा बीजापुर के शासक का चित्र बनाने हेतु गये थे।

→ जहाँगीर ने अबुल हसन को नादिर-उल-जमा की उपाधि दी।

→ शाहमंसूर फूलो, पक्षियों व पौधो की चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध थे उसे जहाँगीर ने नादिर-उल-असर की उपाधि प्रदान की।

संगीत कला -

जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-जहाँगीरी में भारतीय गजल की प्रशंसा की है कि भारतीय गजल हृदय को छू जाती है।

जहांगीर के काल मे 1625 ई० में मनोहर मिश्र ने संगीत पर 'संगीत दर्पण' नामक ग्रंथ की रचना की थी।

जहाँगीर के काल के प्रमुख चित्रकार — तानसेन के पुत्र विलास खाँ, छतर खाँ व शौरी थे

शौरी को जहांगीर ने आनन्द खाँ की उपाधि प्रदान की थी।

सूरसागर की रचना सूरदास ने जहाँगीर के शासन काल में किया जब कि सूरदास अकबर व जहाँगीर दोनो बादशाहो के समकालीन थे।

सिक्का

निसार - यह जहाँगीर द्वारा जारी किया गया चांदी का सिक्का था। इस सिक्को पर जहांगीर ने प्याला और शराब की बोतलो की आकृति बनवायी थी।

-: शाहजहाँ :-

1628 ई० ———— 1658 ई० ———— 1666 ई०

शासन   कैदी जीवन

जन्म – 5 जनवरी 1592 ई० (लाहौर में)
बचपन या मूल नाम – खुर्रम (अर्थ- आनन्द दायक)
पूरा नाम – अबुल मुजफ्फर शिहाबुद्दीन मुहम्मद साहिब किरन-ए-सानी
माता – जगत गोसाई (जोधपुर के मोटा राजा उदय सिंह की पुत्री)
पिता – जहाँगीर
पत्नी – अर्जुमन्द बानो बेगम (1612 ई० में विवाह)
└ इसे खुर्रम द्वारा मुमताज महल की उपाधि दी गयी
पुत्र – कुल 14 बच्चे (जिनमे से 4 पुत्र व 3 पुत्रियां ही जीवित बचे)

जीवित पुत्र (4) तथा जीवित पुत्रियाँ (3) क्रमवार
- जहाँआरा (1614 ई०)
- दाराशिकोह (1615 ई०) सबसे बड़ा पुत्र
- शाहशुजा (1616 ई०)
- रोशनआरा (1617 ई०)
- औरंगजेब (1618 ई०)
- मुरादबख्श (1624 ई०)
- गौहर आरा (1631 ई०)

विवाह – खुर्रम (शाहजहाँ) का विवाह नूरजहाँ के भाई आसफ खाँ की पुत्री अर्जुमंद बानो बेगम (मुमताज) के साथ 30 अप्रैल 1612 ई० मे हुआ तब मुमताज की उम्र 19 वर्ष थी।

→ 1631 ई० मे असीरगढ़ की राजधानी बुरहानपुर (मध्य प्रदेश) में अर्जुमंद बानो बेगम की प्रसव पीड़ा के दरामियान (17 जून 1631) मृत्यु हो गयी।

→ मृत्यु के पश्चात उसे बुरहान पुर मे दफना दिया गया परन्तु उसकी इच्छानुसार उसे आगरा में यमुना नदी के तट पर लेजाकर 1632 ई० में दफना दिया गया और उसी पर विश्व प्रसिद्ध ताजमहल का निर्माण शाहजहाँ द्वारा करवाया गया

→ 1615 ई० में मेवाड़ अभियान की सफलता के पश्चात जहाँगीर ने खुर्रम को शाह की उपाधि तथा दक्षिण अभियानो की सफलता (1616 ई०) के बाद शाहजहां की उपाधि प्रदान की थी।

प्रमुख कार्य -

→ **तीर्थयात्रा कर** - अकबर ने 1563 ई० में हिन्दुओं से लिये जाने वाले तीर्थ यात्रा कर पर प्रतिबन्ध लगा दिया था जिसे शाहजहाँ ने हटा दिया लेकिन अपने शासन के अन्त में पुनः प्रतिबन्ध लगा दिया।

→ **पशु वध** - अकबर द्वारा लगाये गये गौ हत्या प्रतिबन्ध को शाहजहाँ ने हटा दिया।

→ शाहजहाँ ने सिजदा व पैबोस के स्थान पर चहार व तसलीम की प्रथा का प्रारम्भ किया।

→ शाहजहाँ ने दीन-ए-इलाही संवत के स्थान पर हिजरी संवत को चलाया था।

→ शाहजहाँ के दरबारी कवि पं० जगन्नाथ थे जिन्होंने गंगालहरी व गंगारसधार नामक ग्रन्थों की रचना की थी।

→ शाहजहाँ ने दिल्ली के निकट शाहजहाँनाबाद नगर की स्थापना की और 1638 ई० में आगरा से राजधानी दिल्ली में परिवर्तित की।

उत्तराधिकार का युद्ध -

→ 6 सितम्बर 1657 ई० को शाहजहाँ जब झरोखा दर्शन देने में असमर्थ हुआ तो अपने बड़े पुत्र दाराशिकोह को उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया।

→ उस समय शाहजहाँ के अन्य पुत्र निम्न स्थानों के सूबेदार थे

- शाहशुजा - बंगाल का
- मुरादबख्श - गुजरात का
- दाराशिकोह - पंजाब का
- औरंगजेब - दक्षिण भारत का

→ जब औरंगजेब, मुरादबख्श तथा शाहशुजा को इस बात का पता चला तो उन्होंने भी आगरा पर अधिकार करने के लिए आक्रमण कर दिया।

→ इन भाइयों के मध्य हुआ युद्ध ही उत्तराधिकारिता का युद्ध के नाम से जाना जाता है।

बहादुरपुर का युद्ध :-

→ यह युद्ध फरवरी 1658 ई० को बनारस के पास बहादुरपुर नामक स्थान पर बंगाल के सूबेदार शाहशुजा व मुगल सेना के नेतृत्व कर्ता दाराशिकोह के पुत्र सुलेमान शिकोह के के बीच लड़ा गया

→ इस युद्ध मे शाहशुजा पराजित होकर बंगाल भाग गया।

धरमतपुर का युद्ध (1658ई०)

यह युद्ध मध्यप्रदेश राज्य के उज्जैन जिले के धरमतपुर नामक स्थान पर शाही सेना के नेतृत्व कर्त्ता जसवंत सिंह व कासिम खां & औरंगजेब व मुरादबख्श की सेनाओं के बीच लड़ा गया जिसमे कासिम खां ने जसवन्त सिंह का पूर्ण सहयोग नही दिया जिसके कारण जिसके कारण जसवतन्त्र सिंह भाग कर जोधपुर चला गया वहां उनकी रानियो ने किले का दरवाजा बंद कर दिया।

सामूगढ़ का युद्ध (1658ई०)

→ आगरा से 9 Km दूरी पर सामूगढ़ नामक स्थान पर औरंगजेब व मुरादबख्श की संयुक्त सेना और दाराशिकोह के बीच लड़ा गया।

→ इस युद्ध में दाराशिकोह पराजित हुआ तथा दिल्ली भाग गया।

→ औरंगजेब आगरा पर अधिकार करके शाहजहा को आगरा के लाल किले शाहबुर्ज भवन में कैद कर लिया तत्पश्चात औरंगजेब ने दिल्ली जाते समय मुरादबख्श की हत्या करवा दी और दिल्ली पहुंचकर उस पर अधिकार कर लिया।

खजवा या देवराई का युद्ध (1659ई०)

→ यह युद्ध राजस्थान के अजमेर के समीप खजवा या देवराई नामक स्थान पर औरंगजेब व दाराशिकोह के मध्य लड़ा गया

→ इस युद्ध में औरंगजेब ने दाराशिकोह को पराजित कर दिल्ली लाया तथा उसे गन्दे कपड़े पहनाकर उसकी हत्या करवा दी

→ इस प्रकार उत्तराधिकार का युद्ध समाप्त हुआ तथा औरंगजेब बादशाह बना।

- शाहजहाँ कालीन स्थापत्य कला -

आगरा के किले के अन्दर की स्थापत्य कला -

- दीवाने आम
- दीवाने खास
- शाहबुर्ज या मुसम्मनबुर्ज
- शीश महल
- खास महल
- मोती मस्जिद
- जामा मस्जिद (जहाँआरा ने बनवाया)
- मच्छी भवन

नोट - दीवान-ए-आम में विश्व प्रसिद्ध तख्त ए ताउस (मयूर सिंहासन) रखा गया था जिस पर शाहजहाँ बैठकर दरबार लगाता था।

→ इस सिंहासन का वास्तुकार बेबादल खाँ था

→ आगरा के किले के अन्दर कि जामा मस्जिद का निर्माण जहाँआरा बेगम ने करवाया था

→ मुसम्मन बुर्ज या शाह बुर्ज 6 मंजिलो वाला भवन था जिस पर से शाही महल की महिलाएं पशुओ की लड़ाईयां देखती थी।

(ताजमहल) - (1631-1653) ई (कुल 22 वर्ष)

→ ताजमहल का निर्माण शाहजहाँ ने (1631-1632 ई०) अपनी पत्नी अर्जुमंद बानो बेगम (मुमताज महल) को आगरा में यमुना नदी के तट पर दफनाकर प्रारम्भ करवाया था

→ यह 22 वर्षों के पश्चात 1653 ई० मे बनकर तैयार हुआ।

→ इसका डिजाइनर - ईरोजियो
मुख्य मिस्त्री - उस्ताद अहमद लाहौरी
गुम्बदो का निर्माता - ईशा खाँ

→ इसके निर्माण में 2000 मजदूरो ने प्रतिदिन काम किया

→ इसमें लगे हुए संगमरमर (सफेद संगमरमर) को राजस्थान प्रान्त के जोधपुर के मकराना स्थान से मगांया गया था।

→ इसके निर्माण मे कुल 3 करोड़ रु० खर्च हुए

→ ताजमहल की ऊ० 186 फिट

→ वर्ष 1983 ई० में यूनेस्को की विश्व विरासत सूची मे सामिल

- दिल्ली की स्थापत्य कला -

→ शाहजहा ने दिल्ली में अपने नाम पर शाहजहाबाद (7वाँ नगर) नगर बसाने के पश्चात 1638 मे दिल्ली को राजधानी बनाया

→ दिल्ली का लाल किला, दिल्ली का जामा मास्जिद व लाल किले के अन्दर दीवाने आम तथा दीवाने खास नामक भवन निर्मित करवाया था।

→ शाहजहाँ ने लाहौर के किले में भी दीवाने आम तथा दीवाने खास नामक भवनो का निर्माण करवाया

→ शाहजहा के काल में स्थापत्य कला अपने चरमोत्कर्ष पर थी इसलिए शाहजहा के काल को स्थापत्य कला का स्वर्ण युग कहा जाता है।

नोट- → शाहजहा के पुत्रो मे दाराशिकोह सर्वाधिक विद्वान था। इसने भागवद्‌गीता, उपनिषद व रामायण का फारसी अनुवाद कराया

→ इसने सर-ए-अकबर (महान रहस्य) नाम से उपनिषदो का अनुवाद कराया

→ शाह बुलंद इकबाल के नाम से दारा शिकोह को जाना जाता है।

-: औरंगजेब :-
(1658-1707 ई०)

जन्म — 3 नवम्बर 1618 ई० (उज्जैन के दोहद में)
पूरा नाम — मुइज्जुद्दीन मुहम्मद औरंगजेब
माता — मुमताज महल
पिता — शाहजहाँ
राज्याभिषेक के समय उपाधि - अब्दुल मुजफ्फर मुहीउद्दीन मुहम्मद औरंगजेब बहादुर आलमगीर बादशाह गाजी

राज्याभिषेक - प्रथम मुगल शासक जिसका दो बार राज्याभिषेक हुआ
① 31 जुलाई 1658 ई० (दिल्ली में)
② 15 जून 1659 ई० (दिल्ली में) (खजवा एवं देवराई युद्ध के बाद)

औरंगजेब के गुरु - मीर मुहम्मद हकीम

राजत्व सिद्धान्त → औरंगजेब भारत को दार-उल-हर्ब (काफिरो का देश) से दार-उल-इस्लाम (इस्लाम का देश) बनाना चाहता था।

धार्मिक नीति →

→ औरंगजेब ने सिक्को पर कलमा खुदवाया, हिन्दु राजाओ के माथे पर तिलक लगाना, तुलादान, झरोखा दर्शन, संगीत-नृत्य, शराब, भाग का उत्पादन, हिन्दुओ के त्यौहार जैसे होली, दीपावली, दशहरा आदि, ताजिया निकालने पर तथा सूती व रेशमी, सुन्दर परिधानो को पहनने पर प्रतिबंध लगा दिया

→ औरंगजेब शराब न पीने की कसम खाया था इसलिए उसे शाही दरवेज कहा जाता है।

→ अपने व्यक्तिगत चारित्रिक गुणो के कारण औरंगजेब को जिन्दा पीर के नाम से जाना जाता था।

→ औरंगजेब खुद एक कुशल वीणा वादक था।

मुहतासिब (धर्म निरीक्षक) -

→ औरंगजेब ने अपने धार्मिक नीतियों का पालन करवाने के लिए मुहतासिबो की नियुक्ति किया था।

कर -

जजिया कर → यह गैरमुसलमानो से वसूला जाने वाला धार्मिक कर था जिसे औरंगजेब ने 1679 ई० मे लगाया था तथा 1704 ई० में दक्षिण भारत से जजिया कर को समाप्त कर लिया था।

→ सम्राट बनने के बाद इसने जनता के आर्थिक कष्टो के निवारण हेतु रासदारी (आन्तरिक पारगमन शुल्क) व पानदारी (व्यापारिक चुंगियो) को समाप्त कर दिया था।

विवाह → औरंगजेब का विवाह 1637 ई० में फारस (ईरान) राजघराने की राजकुमारी दिलरास बानो के साथ हुआ था। औरंगजेब ने उसे राबिया-उद-दौरानी की उपाधि प्रदान की थी।

- औरंगजेब कालीन विद्रोह -

जाटों का विद्रोह (1669-1681 ई०) -

→ 1661-62 ई० में मुगल गवर्नर अब्दुल खाँ ने मथुरा के केशव दास मंदिर का विध्वंश कराकर मस्जिदों का निर्माण करवाने लगा।

→ औरंगजेब की इन धार्मिक नीतियों से परेशान होकर गोकुल नामक जाट के नेतृत्व में 2000 जाटों ने औरंगजेब के विरुद्ध विद्रोह कर दिया (1669 ई० में)

→ मुगलों की कुछ सेनाओं को जाटों द्वारा पराजित किया गया।

→ तत्पश्चात 1670 ई० में मुगल सेनाओं द्वारा गोकुल की हत्या कर दी गयी।

→ परन्तु मुगलों व जाटों के बीच 1669-81 ई० तक संघर्ष चलता रहा

सतनामियों का विद्रोह

→ नारनौर व मेवात में सतनामी जातियों का एक धार्मिक पंथ था। सतनामी पंथ को मानने वाले निचले जाति के लोग थे।

→ 1672 ई० में एक सिपाही व सतनामी के झड़प हो गई और इसने एक विद्रोह का रूप ले लिया।

सिक्ख विद्रोह (1675 ई०) -

→ यह औरंगजेब के समय का अंतिम व एकमात्र धार्मिक विद्रोह था।

→ गुरू हरगोविन्द के पुत्र व गुरू हरकिशन के उत्तराधिकारी गुरू तेज बहादुर सिक्खों के 9 वें गुरू हुए

→ इनके समय में औरंगजेब कश्मीर के लोगो को इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए दबाव डालने लगा तो कश्मीर के लोगो ने गुरू तेज बहादुर से मिलकर अपनी आप बीती बताई

→ गुरू तेज बहादुर ने कहा कि जाकर उससे कह दो अगर गुरू ने इस्लाम को स्वीकार कर लिया तो हम लोग भी इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेंगे।

→ इसीकारणवश औरंगजेब ने तेजबहादुर को कैद कर दिल्ली मंगवाया तथा जब उन्होंने इस्लाम स्वीकार नहीं किया तो दिल्ली में ही 1675 ई० में उन्हें फांसी दे दी गई।

अन्य विद्रोह -

① अफगान विद्रोह
② बुंदेला विद्रोह
③ राजपूताना विद्रोह

-: साम्राज्य विस्तार :-

आसाम विजय →

→ 1661 ई० में औरंगजेब ने आसाम विजय हेतु बंगाल के सूबेदार मीर जुमला को भेजा।

→ मीर जुमला ने 1662 ई० में आसाम पर अधिकार कर उसे मुगल सल्तनत मे सामिल कर लिया।

बीजापुर की विजय -

→ 1686 ई० मे औरंगजेब ने बीजापुर के शासक व अली आदिल शाह II के पुत्र सिकन्दर आदिल शाह को पराजित कर बीजापुर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

गोलकुण्डा विजय -

→ 1687 ई० में औरंगजेब के पुत्र शाहजादा शाह आलम ने गोलकुण्डा के शासक अबुल हसन को मुगल साम्राज्य के अधीन रहने की सलाह दी।

→ अबुल हसन ने उसकी सलाह को अस्वीकार कर दिया तो 1687 ई० मे गोलकुण्डा के शासक अबुल हसन को पराजित कर औरंगजेब ने गोलकुण्डा को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

मृत्यु :-

→ अपने अंतिम समय में औरंगजेब दक्षिण के विद्रोहो को दबाने के लिए गया था उसी समय महाराष्ट्र प्रान्त के अहमदनगर जिले में 3 मार्च 1707 ई० में उसका देहान्त हो गया।

→ उसके शव को दौलताबाद स्थित खुलदाबाद नामक स्थान पर ले जाकर प्रसिद्ध सूफी शेख बुरहानुद्दीन के मकबरे में दफना दिया गया।

औरंगजेब कालीन स्थापत्य कला / वास्तुकला

बीबी का मकबरा -

यह मकबरा महाराष्ट्र प्रान्त के औरंगाबाद जिले में दौलताबाद के निकट खुल्दाबाद में बनवाया गया था।

→ इस मकबरे को राबिया - उद - दौरानी का मकबरा या द्वितीय ताजमहल भी कहा जाता है।

→ यह काले पत्थरो से 1678 ई० में औरंगजेब द्वारा निर्मित करवाया गया।

→ इसे काला ताजमहल, दक्षिण का ताजमहल या फूहड़ ताजमहल भी कहा जाता है।

बादशाही मस्जिद -

यह मस्जिद औरंगजेब द्वारा लाहौर में बनवाया गया था यह मस्जिद शाहजहां द्वारा बनवायी गयी नई दिल्ली की जामा मस्जिद की हुबहु नकल है।

मोती मस्जिद -

→ दिल्ली में लाल किले के अन्दर की मोती मस्जिद का निर्माण औरंगजेब ने करवाया था

→ जब कि आगरा के किले के अन्दर की मोती मस्जिद का निर्माण शाहजहां ने करवाया था।

फुटकर जानकारियाँ -

→ औरंगजेब ने अपनी सबसे बड़ी बहन जहाँआरा की मृत्यु (1681ई०) के बाद उसे साहिबात - उज - जमानी की उपाधि दी।

→ औरंगजेब अन्य मुगल सम्राटो की तुलना में सबसे अधिक हिन्दू अधिकारियो की नियुक्ति करने वाला मुगल सम्राट था।

→ भारतीय शास्त्रीय संगीत पर फारसी में सबसे अधिक पुस्तके औरंगजेब के ही शासन काल में लिखी गयी।

→ औरंगजेब के शासनकाल मे तोड़े गये प्रमुख हिन्दू मन्दिर -
सोमनाथ का मन्दिर, बनारस का विश्वनाथ मन्दिर, मथुरा का केशव राय मन्दिर

-: उत्तरकालीन मुगल शासक :-

औरंगजेब की मृत्यु के बाद (1707 ई०) जिन 11 बादशाहो ने भारत पर शासन किया उन्हे उत्तरकालीन मुगल बादशाह की संज्ञा प्रदान की गयी

औरंगजेब ने अपनी मृत्यु से पूर्व अपने पूरे साम्राज्य को अपने जीवित तीन पुत्रो में वसीयत के अनुसार विभाजित कर दिया था

वसीयतनामा के अनुसार

3 पुत्र

- शाहजादा मुअज्जम (बहादुर शाह प्रथम) — दिल्ली व आगरा सहीत कुल 11 सूबे प्राप्त हुए
- शाहजदा आजम — गुजरात सहित कुल 8 सूबे प्राप्त हुए
- शाहजादा कामबख्श — हैदराबाद

शाहजादा मुअज्जम (बहादुर शाह प्रथम) (1)

पुत्र

- जहांदारशाह (2)
- अजीम उस शान → पुत्र → फर्रुखसियर (3)
- रफी उस शान → 2 पुत्र
  - रफी-उद-दरजात (4)
  - रफी-उद-दौला (5)
- जहाँनशाह → पुत्र → मुहम्मदशाह (6) → पुत्र → अहमदशाह (7) → पुत्र → आलमगीर II (8) → पुत्र → शाहआलम II (9) → पुत्र → अकबर II (10) → पुत्र → बहादुरशाह जफर (11)

उत्तरकालीन मुगल शासको का क्रम

1- बहादुर शाह प्रथम (1707-12 ई०) शाह ए बेखबर
2- जहांदार शाह (1712-13 ई०) लम्पट मुर्ख
3- फर्रूखसियर (1713-19 ई०) घृणित कायर
4- रफी उद- दरजात (1719 (फरवरी- जून)
5- रफी उद- दौला (1719 (जून- सितम्बर)
6- मुहम्मदशाह (1719-1748) रंगीला बादशाह
7- अहमदशाह (1748-54 ई०)
8- आलमगीर II (1754-59 ई०)
9- शाह आलम II (1759-1806 ई०)
10- अकबर II (1806-1837 ई०)
11- बहादुर शाह II (जफर) (1837-1858 ई०)

नोट- मुगल सल्तनत का आन्तिम बादशाह बहादुर शाह II या बहादुर शाह जफर था

बहादुर शाह प्रथम (1707-1712 ई०)

मूल नाम- मुअज्जम
अन्य नाम- शाह आलम प्रथम
उपाधि - शाह-ए-बेखबर (खफी खाँ द्वारा)
↓ इसकी पुस्तक
मुन्तखाब-उल-त्वारिख

जाजऊ का युद्ध (जून 1707)-

→ बहादुर शाह प्रथम ने आगरा के समीप जाजऊ नामक स्थान पर अपने भाई आलम को 18 या 20 जून 1707 को पराजित कर मार डाला।

→ जाजऊ के युद्ध के पश्चात- बहादुर शाह प्रथम जनवरी 1709 ई० में हैदराबाद पहुँच अपने छोटे भाई कामबख्श व उनके पुत्रो को मार डाला

→ बहादुर शाह प्रथम अपने पिता औरंगजेब की संकीर्णतावादी नीतियों को छोड़कर समन्वयवादी नीतियो का पालन करते हुए राजपूतो व जाटो से अच्छे सम्बन्ध बनाये परन्तु सिखों से मधुर सम्बन्ध नही हुए किन्तु किसी प्रकार का विद्रोह भी नही हुआ

→ 1712 ई० में बहादुर शाह प्रथम की मृत्यु हो गयी जिसके बाद उसका पुत्र जहांदार शाह शासक बना।

जहाँदार शाह (1712-1713 ई०)

वजीर - जुल्फीकार खाँ (ईरान का रहने वाला)

→ जहाँदार शाह के समय सारी शक्तियां उसके वजीर जुल्फीकार खाँ के हाथो में थी।

→ जहाँदार शाह लाल कुमारी नामक वेश्या पर आसक्त रहता था तथा उसे हस्तक्षेप करने का आदेश दे रखा था। इसलिए जहाँदार शाह को लम्पट मूर्ख भी कहा जाता है।

→ सैयद बंधु अब्दुल खाँ तथा हुसैन अली ने अजीम-उस-शान के पुत्र फर्रूखसियर के द्वारा 1713 ई० मे जहाँदार शाह की हत्या करवा दी।

फर्रूखसियर (1713-1719 ई०)

→ सैयद बन्धुओ ने फर्रूखसियर को बादशाह बनाया था। फर्रूखसियर ने अब्दुल खाँ को अपना वजीर तथा हुसैन अली को मीरबख्श का पद प्रदान किया था

→ बादशाह बनने के पश्चात फर्रूखसियर ने जजिया कर कर प्रतिबंध लगा दिया लेकिन 1717 ई० में पुनः जजिया कर को लागू भी कर दिया।

→ फर्रूखसियर असाध्य रोग (फोड़ा) से पीड़ित था जिसका उपचार सर्जन डा० विलियम हैमिल्टन ने किया था।

→ 1717 ई० मे उसने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को पश्चिम बंगाल मे व्यापार करने का फरमान जारी कर दिया था इस व्यापार के बदले मे कम्पनी फर्रूखसियर को 3000 रू०/वर्ष कर देने का वादा किया

→ फर्रूखसियर को घृणित कायर भी कहा जाता है।

→ 1719 ई० में सैयद बंधुओ ने गला दबाकर बादशाह की हत्या कर दी।

नोट- फर्रूखसियर की मृत्यु के बाद क्रमश रफी उद दरजात व रफी उद दौला बादशाह बने परन्तु दोनो भाइयो की बीमारी के कारण मृत्यु हो गयी।

मुहम्मदशाह (1719-1748 ई०)

मूल नाम - रोशन अख्तर

1720 में० - सैयद बन्धुओ का अन्त व जजिया कर को पूर्णत समाप्त कर दिया

1739 में - नादिरशाह का आक्रमण

नोट- इसे रंगीला बादशाह भी कहा जाता हैं (सुन्दर युवतियो के प्रति रूझान)

→ सन- 1736 ई० में नादिरशाह (फारस / ईरान / पार्शिया) का शासक बना

→ 1738 ई० में अफगानिस्तान व पश्चिमी पंजाब को अपने अधिकार मे कर वह पेशावर के मार्ग से भारत मे प्रवेश किया

→ करनाल का युद्ध (15 मार्च 1739 ई०) -

→ यह युद्ध पूर्वी पंजाब मे (अब हरियाणा) करनाल नामक स्थान पर नादिर शाह व मुहम्मद शाह के बीच लड़ा गया

→ इस युद्ध में मुहम्मदशाह की पराजय हुई तथा नादिरशाह ने इसे कैद कर लिया और दिल्ली पहुंच विश्व प्रसिद्ध सिंहासन तख्ते ताऊस (मयूर सिंहासन) पर अधिकार करके 15 दिनो तक शासन करने के पश्चात- दिल्ली को बरबाद कर तख्त-ए ताऊस सिंहासन, कोहिनूर हीरा तथा 70 करोड़ रू० (लगभग) लेकर फारस चला गया तथा मुहमदशाह को आजाद कर दिया।

→ मुहम्मद शाह ने पुन: जीवन पर्यन्त 1748 ई० तक शासन किया

नोट- तख्ते ताऊस (मयूर सिंहासन) पर बैठने वाला अन्तिम मुगल शासक मुहम्मदशाह था।

अहमदशाह (1748- 1754 ई०)

→ मुहम्मद शाह के बाद अहमदशाह शासक बना

→ अहमदशाह के शासन काल मे 1748 ई० में ईरान के शाह अहमदशाह अब्दाली का भारत पर प्रथम आक्रमण हुआ था।

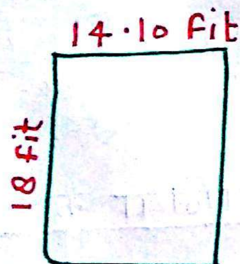
आलमगीर द्वितीय (1754 - 1759 ई०)

→ इसके समय की प्रमुख दो घटनाएँ -

① ब्लैक होल की घटना (20 जून 1756 ई०)

② प्लासी का युद्ध (23 जून 1757 ई०)

→ ① ब्लैक होल ट्रैजेडी (कालकोठरी का त्रासदी) → इस घटना का उल्लेख कार्यवाहक बंगाल का गवर्नर जेड हॉलवेल ने किया था



→ हालवेल के अनुसार बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला ने 20 June 1757 ई० को मुर्शिदाबाद मे 18 Fit लम्बे व 14·10 Fit चौड़े कोठरी मे 146 अंग्रेजो को बंद कर दिया (जिनमे पु०, महिला० व बच्चे सामिल)

कैदियो की सं० - 146
जीवित बचे - 23

→ 21 Jun 1756 ई० को सुबह जब कोठरी खोला गया तो मात्र 23 लोग जिन्दा बचे जिसमे से मैं भी था।

→ आधुनिक इतिहासकारो के अनुसार हालवेल की यह एक मनगढ़न्त कहानी थी।

② प्लासी का युद्ध (23 जून 1757 ई०) -

→ यह युद्ध प० बंगाल मे प्लासी नामक स्थान पर बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला व अंग्रेज सेनापति राबर्ट क्लाइव के बीच लड़ा गया जिसमे नवाब की हार हुई।

शाह आलम द्वितीय (1759 - 1806 ई०)

मूल नाम - अली गौहर

दो प्रमुख युद्ध - ① पानीपत का तीसरा युद्ध

दिन - 14 जनवरी 1761 ई०

पक्ष - अहमद शाह अब्दाली व मराठो के बीच

परिणाम - अहमदशाह अब्दाली की विजय

② बक्सर का युद्ध -

दिन - 23 अक्टूबर 1764 ई०

पक्ष - त्रिगुट (शाह आलम द्वितीय, बंगाल के नवाब मीर कासिम तथा अवध के नवाब सुजाउद्दौला की सयुक्त सेना) और ईस्ट इंडिया कम्पनी के सेनापति हेक्टर मुनरो के बीच

परिणाम - त्रिगुट की पराजय हुई और मुगल शासक शाह आलम को पेंशन भोगी बनाकर इलाहाबाद मे रख दिया।

→ 1765 ई० में अंग्रेजो ने शाह आलम से बिहार, बंगाल व उड़ीसा की दीवानी 26 लाख रू०/वर्ष के कर पर प्राप्त कर ली।

→ मराठो के सहयोग से शाह आलम II 1772 ई० मे इलाहाबाद से दिल्ली गया।

→ गुलाम कादिर खाँ ने 1806 ई० में शाह आलम II की हत्या करवा दी

नोट - ① पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठो की सेना को वजीर इमाद उल मुल्क का समर्थन मिला तथा इब्राहीम खां गार्दी ने मराठो की ओर से तोपखाने का नेतृत्व करते हुए भाग लिया

② अहमदशाह अब्दाली का वास्तविक नाम अहमद खाँ था। इसने आठ बार भारत पर आक्रमण किया।

अकबर द्वितीय (1806-1837 ई०)

→ अकबर II अंग्रेजो के संरक्षण में बनने वाला प्रथम बादशाह था।
→ लाल किले पर अधिकार
→ राजा राम मोहन राय को 'राजा' की उपाधि प्रदान की

बहादुर शाह II या बहादुर शाह जफर (1837-58 ई०)

→ यह अन्तिम मुगल बादशाह था।
→ 1857 के विद्रोह का नेतृत्व इसने दिल्ली से किया था जिसके कारण 1858 मे अंग्रेजो द्वारा इसे कैद करके रंगून भेज दिया गया
→ 1862 ई० में रंगून में ही बहादुर शाह जफर की मृत्यु हो गयी उसका मकबरा रंगून में ही है।
→ बहादुर शाह II 'जफ़र' के नाम से शेरो-शायरी करता था
→ दिल्ली में अंग्रेजो द्वारा जब इसे कैद किया गया तो उस समय उसने लिखा कि —

" न तो मैं किसी की आंख का नूर हूँ,
न तो किसी के दिल का करार हूँ,
मैं किसी के काम आ न सका
वो बुझता हुआ चिराग हूँ,"

मुगलकालीन प्रशासन

इकाई	प्रमुख
साम्राज्य	बादशाह
सूबा	सूबेदार
जनपद	फौजदार
परगना	शिकदार
गाँव / ग्राम	मुकद्दम

बादशाह के प्रमुख अधिकारी

1- वकील (प्रमुख प्रधानमंत्री)

2- दीवान (आय व्यय का प्रमुख)

- दीवान-ए-खालसा (राजकीय भूमि का प्रमुख अधिकारी)
- दीवान-ए-जागीर (जागीरो का प्रमुख अधिकारी)
- दीवान-ए-तन (वेतनाधिकारी)
- दीवान-ए-शहादत — मदद-ए-मास (अनुदानित भूमि का अधिकारी)
- दीवान-ए-मुशर्रिफ (लेखाधिकारी) राजस्व विभाग
- दीवान-ए-बायोतूत (कारखानो का प्रमुख अधिकारी)
- दीवान-ए-मुस्तौफी महालेखा परीक्षक

3- सद्र-उस-सुदुर - धार्मिक विभाग का प्रमुख अधिकारी

4- काजी-उल-कुजात - न्याय विभाग का प्रमुख अधिकारी

5- मीरबख्शी - सैन्य संगठन का प्रमुख अधिकारी एवं महावेतनाधिकारी

6- मुहतासिब - धर्म निरीक्षक (इस पद का सृजन औरंगजेब ने किया था।

7- मीर-ए-शामा - शाही गृहस्थी का रख-रखाव करने का प्रमुख अधिकारी

8- दारोग-ए-डाकचौकी - गुप्तचर एवं डाक विभाग का प्रमुख अधिकारी

9- मीर-ए-मुंशिब - डाकिया / डाक पहुचाने वाला प्रमुख अधिकारी

→ भू राजस्व कर → उपज का 1/3 होता था

→ राज्य की भूमि को खालिसा कहा जाता था।

MISSION UPSC

(फेसबुक ग्रूप मे उपलब्ध)



Mob-9415288093